सम्पूर्णता वर्ष

साक्षीभाव और समभाव – 3

15.11.2014

1. स्वमान – मैं पूर्वज हूँ।

- बाबा के महावाक्य हैं कि तुम सभी धर्म की आत्माओं के पूर्वज हो इसलिये तुम्हारे मन में सभी के लिये शुभ-भावना हो...चाहे वह किसी भी धर्म, जाति, भाषा या वर्ग का हो...(कैसा भी अपकारी, आततायी वा क्रूर हो..)।

2. योगाभ्यास –

अ. भगवानुवाच –`जब आप आत्माएँ अपने पूर्वजपन की स्मृति से, नशे से किसी भी आत्मा से मिलेंगे तो हर धर्म की आत्मायें यह स्वीकार करेंगी कि ये हमारे ही पूर्वज हैं...हमारे इष्ट देव हैं। आप पूर्वजों का कर्त्तव्य है बाप द्वारा मिली हुई शक्तियों से सर्व आत्माओं की पालना करना।`

ब. मेरे सिर के ऊपर विशाल कलपवृक्ष है...मैं सारे कल्पवृक्ष को पवित्रता, शान्ति व शक्तियों के वायब्रेशन्स दे रहा हूँ...।

स. सारे दिन बीच-बीच में पूर्वजपन की स्थिति में स्थित हो, परमधाम निवासी बन, विश्व को लाईट और माईट दें।

3. धारणा – समभाव

- जो साक्षीपन की सीट पर सेट होकर बाप के साथ का अनुभव करते हैं, वही सबके साथ समभाव रख पाते हैं।

- अपने वाणी-व्यवहार को चेक करें कि क्या जाति, लिंग या आयु आदि के भेदभाव से मुक्त होकर आज सारे दिन मैंने सबसे समभाव युक्त व्यवहार किया ? सुनी-सुनायी बातों या पूर्वाग्रहों के आधार पर किसी से अच्छा व किसी से बुरा व्यवहार तो नहीं किया ? ?

4. चिंतन –

- समभाव अर्थात् क्या ?
- सर्व के लिये समभाव कैसे हो ?

5. तपस्वियों प्रति – प्रिय तपस्वियों ! हम इस संसार की आधारमूर्त्त, उद्धारमूर्त्त व पूर्वज आत्मायें हैं...इस संसार रुपी नाटक के सभी पार्टधारी आत्माएँ हमसे जुड़ी हुई हैं...वे सभी हमारी अच्छी व बुरी भावनाओं से प्रभावित होते हैं इसलिये हमें सभी के लिये समभाव रखना है, श्रेष्ठ भाव रखना है।